हेमलता तिवारी, बुंदेलखंडी मंदिरों में उपस्थित मूर्तिकला का प्रतिमा वैज्ञानिक पक्ष, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 15-17*

बुंदेलखंडी मंदिरों में उपस्थित मूर्तिकला का प्रतिमा वैज्ञानिक पक्ष

हेमलता तिवारी*

प्रस्तावना (Introduction)

भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक चेतना का एक बड़ा हिस्सा उसके प्राचीन मंदिरों और उनमें प्रतिष्ठित मूर्तियों में समाहित है। बुंदेलखंड–a ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भूगोलिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध क्षेत्र–अपने स्थापत्य, किलों, मंदिरों और मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध है।

बुंदेलखंड के मंदिरों में पाई जाने वाली मूर्तियाँ केवल पूजन की प्रतीक नहीं, बल्कि वे प्राचीन भारत की धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और शिल्पीय चेतना की मूर्त अभिव्यक्ति हैं। इस शोध में हम बुंदेलखंडी मंदिरों में विद्यमान मूर्तियों का प्रतिमा विज्ञान (Iconography) की दृष्टि से अध्ययन करेंगे, जिसमें मूर्ति निर्माण की शास्त्रीय विधियाँ, प्रतीकात्मकता, विविधता, क्षेत्रीय विशेषताएँ और उनके धार्मिक अर्थ की विवेचना की जाएगी।

2. शोध की उद्देश्य

1. बुंदेलखंड क्षेत्र के प्रमुख मंदिरों की मूर्तियों का प्रतिमा वैज्ञानिक अध्ययन करना।
2. मूर्तियों की शैली, मुद्रा, आयुध, वाहन और प्रतीकात्मक विशेषताओं का विश्लेषण।
3. मूर्तिकला के माध्यम से धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सन्देशों को समझना।
4. स्थानीय मूर्तिकला पर पल्लव, चालुक्य, नागर और बौद्ध प्रभावों की पहचान करना।
5. संरक्षण की वर्तमान स्थिति और संभावित समाधान सुझाना।

3. प्रतिमा विज्ञान: एक परिचय

प्रतिमा विज्ञान (Iconography) वह शास्त्र है जो देवी-देवताओं, पौराणिक पात्रों और धार्मिक प्रतीकों की शास्त्रीय परिभाषाओं, मुद्रा, वाहन, आयुध, और चिन्हों का अध्ययन करता है। यह केवल मूर्ति की आकृति नहीं, बल्कि उसके पीछे की धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना को समझने का माध्यम है।

भारतीय प्रतिमा विज्ञान को शिल्पशास्त्र, वास्तुशास्त्र, अगम तंत्र, और पुराणों से दिशा मिलती है। "विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र", "शिल्परत्न", "मयमतम्" आदि ग्रंथों में मूर्ति निर्माण की संहिताएँ दी गई हैं।

4. बुंदेलखंड: ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

बुंदेलखंड मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के बीच स्थित है, जहाँ खजुराहो, ओरछा, देवगढ़, कालिंजर, महोबा, टीकमगढ़, और चित्रकूट जैसे सांस्कृतिक स्थल मौजूद हैं। यहाँ 9वीं से 14वीं शताब्दी के मध्य चंदेल, कच्छपघात, बघेल और बुंदेला राजाओं के शासनकाल में कलात्मक समृद्धि चरम पर थी।

- खजुराहो के मंदिर: विश्व प्रसिद्ध हैं, जहाँ विष्णु, शिव, सूर्य, गणेश, देवी, नाग, यक्ष, अप्सरा, और मिथुन मूर्तियाँ अत्यंत ललित रूप में अंकित हैं।
- देवगढ़ मंदिर (ललितपुर): दशावतार मंदिर विशेष रूप से मूर्तिकला की दृष्टि से समृद्ध है।
- ओरछा मंदिर: बुंदेला स्थापत्य शैली का उत्तम उदाहरण हैं, जहाँ मूर्तियाँ अपेक्षाकृत बाद के काल की हैं।

हेमलता तिवारी, बुंदेलखंडी मंदिरों में उपस्थित मूर्तिकला का प्रतिमा वैज्ञानिक पक्ष, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 15-17*

5. मूर्तियों की प्रतिमा वैज्ञानिक विशेषताएँ

5.1 देव मूर्तियाँ (Divine Sculptures)

(क) शिव मूर्ति:

- त्रिशूल, डमरु, नाग, तीसरी आँख, जटाजूट।
- नटराज रूप में तांडव करते हुए मूर्तियाँ।
- पार्वती, गणेश, कार्तिकेय के साथ पारिवारिक मूर्तियाँ।

(ख) विष्णु मूर्ति:

- चक्र, गदा, शंख, पद्म।
- दशावतार स्वरूप - वाराह, नरसिंह, वामन, राम, कृष्ण की प्रतिमाएँ विशेष।
- गरुड़ पर आरूढ़ मूर्तियाँ।

(ग) सूर्य देव:

- रथ पर सवार, सात अश्व, कमल में खड़े।
- ओरछा और देवगढ़ में सूर्य मूर्तियाँ विशेष प्रसिद्ध।

(घ) देवी मूर्तियाँ:

- दुर्गा (महिषासुरमर्दिनी), लक्ष्मी, सरस्वती।
- सप्तमातृका की समूह प्रतिमाएँ।

5.2 यक्ष, गंधर्व, मिथुन और लोक प्रतिमाएँ

- मिथुन मूर्तियाँ: प्रेम, आनंद और मानव जीवन के उत्सव की प्रतीक। खजुराहो में विशेष प्रसिद्ध।
- गंधर्व और किन्नर: संगीत व नृत्य मुद्रा में।
- यक्ष-यक्षिणी: समृद्धि और प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीक।
- द्वारपाल: मंदिर के प्रवेश द्वारों पर भव्य रूप में।

5.3 वास्तु-शिल्पीय विशेषताएँ

- मूर्तियों की स्थिति: गर्भगृह, मंडप, शिखर, स्तंभों, द्वारों पर।
- मुद्रा: स्थिर, चलनशील, नृत्यरत, ध्यानमग्न।
- अनुपात: अंगुलि-प्रमाण, त्रैलोक्यन्याय के अनुसार।
- अलंकरण: गहनों, मुकुट, वस्त्र, कंठहार, करधनी आदि का विस्तृत अंकन।

6. स्थापत्य शैलियाँ और मूर्तिकला का संबंध

बुंदेलखंड में मुख्यतः नागर शैली में मंदिर बने हैं। खजुराहो में यह शैली अपने चरम पर है।

- नागर शैली में रेखा शिखर और समृद्ध मूर्तिकला का संयोजन मिलता है।
- प्रत्येक मंदिर की भित्तियों पर 600 से 900 तक मूर्तियाँ होती हैं।

हेमलता तिवारी, बुंदेलखंडी मंदिरों में उपस्थित मूर्तिकला का प्रतिमा वैज्ञानिक पक्ष, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 15-17*

- प्लास्टिक आर्ट का उत्कर्ष - मूर्तियाँ पत्थर में उकेरी गई होते हुए भी अत्यंत कोमल प्रतीत होती हैं।

7. मूर्तियों में सामाजिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति

- नारी स्वरूप की विविधता - देवी, अप्सरा, गृहिणी, नर्तकी।
- समाज का वर्गीकरण - कृषक, सेनानी, व्यापारी, भिक्षु, ऋषि, आदि।
- लोककथाएँ और पौराणिक आख्यान - रामायण, महाभारत, भागवत की दृश्यावलियाँ।

8. संरक्षण की स्थिति और चुनौतियाँ

- समय, पर्यावरण, मानव उपेक्षा और अतिक्रमण के कारण मूर्तियाँ क्षतिग्रस्त।
- चोरी और अंतरराष्ट्रीय अवैध व्यापार की शिकार।
- कई मूर्तियाँ बिना पहचान के खुले में पड़ी हैं।

समाधान:

- डिजिटल डॉक्युमेंटेशन।
- स्थानीय संरक्षण समितियों की भागीदारी।
- पुरातात्विक सर्वेक्षण द्वारा पुनः वर्गीकरण और संरक्षण।

9. निष्कर्ष

बुंदेलखंड की मूर्तिकला भारतीय कला और धर्म का गौरवशाली अध्याय है। यहाँ की मूर्तियाँ केवल शिल्प नहीं, आत्मा की अभिव्यक्ति हैं। इनकी प्रतिमा वैज्ञानिक व्याख्या न केवल धार्मिक धरोहर को समझने में सहायक है, बल्कि वर्तमान पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने का सेतु भी है।